Journal Homepage: - www.journalijar.com
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)
ISSN NO. 2320-5407
Article DOI: 10.21474/IJAR01/9987
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/9987

RESEARCH ARTICLE

हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्र छात्राओं का छात्र संघ चुनावों के प्रति अभिवृति का अध्ययन ।

अनित कौर ंऔर शंकर सिंह .
1ए शिक्षा विभाग, बिडला परिसर हे.न.ब.गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल .
2. शोधार्थी, शिक्षा विभाग, बिडला परिसर.

Manuscript Info

Manuscript History
Received: 05 September 2019
Final Accepted: 07 October 2019
Published: November 2019

Key words:-
लोकतान्त्रिक व्यवस्था क्षेत्रीयता अभिवृति छात्र संघ ।.

Abstract

सम्पूर्ण विश्व स्तर पर वर्तमान में लोकतान्त्रिक व्यवस्था को जनप्रिय शासन व्यवस्था के रूप में देखा जा रहा है साथ ही लोकतंत्र का आधार शिक्षित, सक्रिय एवं जागरूक नागरिकों को माना जाता है । अगर यही चीज युवा शक्ति के तौर पर समझी जाए इसका महत्व और अधिक बढ़ जाता है क्योकि किसी की राष्ट्र की युवा पीढ़ी उसके विकास की दिशा निर्देशित करती है । प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य हेमवती नन्दनं बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विघार्थियों का छात्र संघ चुनावों के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना है । न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक न्यादर्श विधि से हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत 300 विघार्थियों का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ो के संग्रहण के लिए शोधार्थी द्वारा स्वयं निर्मित छात्र संघ चुनाव अभिवृति का उपयोग किया गया है ।प्राप्त आंकड़ो के विश्लेषण एवं अवलोकन के लिए प्रतिशत ,मध्यमान, मानक विचलन एवं टी सांखिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया है । शोध के निष्कर्ष प्राप्त हुए है कि हेमवती नन्दनं बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विघार्थियों का छात्र संघ चुनावों के प्रति अभिवृति में लिंग विभिन्नता, क्षेत्रीयता, शैक्षिक स्तर एवं कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के आधार पर सार्थक अंतर पाया गया है एवं छात्राओं की अपेक्षा छात्रो का दृष्टिकोण छात्र संघ चुनावों के प्रति अधिक सकारात्मक पाया है । 70 प्रतिशत विघार्थियों ने छात्र संघ की उपयोगिता विश्वविद्यालय के प्रशासनिक कार्यो में जैसे कि आई कार्ड बनाने, अंकतालिका सम्बन्धी समस्याओं के सुधार, होस्टल सम्बन्धी व्यवस्था, एवं विघार्थियों की समस्या विश्वविद्यालय के समक्ष रखने के रूप में माना है ।.

Copy Right, IJAR, 2019,. All rights reserved.

Introduction:-

वर्तमान समय में प्रचलित वैश्विक शासन व्यवस्थाओं में लोकतंत्र अधिकांश देशों की शासन व्यवस्था का आधार है। कुलीन तन्त्र व राजतन्त्र आदि अपनी निरंकुशता व अन्य बुराइयों के कारण अपना अस्तित्व लगभग खो चुके हैं। शासन व्यवस्था के रूप में लोकतन्त्र की सफलता नागरिकों के व्यवहार एवम् विचारों पर निर्भर होती हैं। निःसन्देह लोकतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था प्रचलित सभी शासन व्यवस्थाओं से श्रेष्ठ व उपर्युक्त है। किन्तु लोकतंत्र का सफलता पूर्वक संचालन एवम् लोकतन्त्रात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति तभी सम्भव है जब नागरिक को छात्र–जीवन से ही नागरिकता के गुणों के विकास हेतु प्रशिक्षण दिया जाय। नागरिकता के प्रशिक्षण का छात्र संघ सबसे बेहतर एवम् उपर्युक्त तरीका है इसमें दो मत नहीं कि छात्र–संघ लोकतन्त्र की बुनियाद को मजबूत करता है। छात्र–संघ से ही नागरिको का राजनीतिक प्रशिक्षण सुनिश्चित होता है। छात्र–संघ से ही छात्र–छात्राओं में नेतृत्व क्षमता का विकास होता है। युवा छात्र–छात्राओं में आदर्श नागरिकता के गुणों का विकास, लोकतन्त्रात्मक व्यवस्था की समझ तथा लोकतंत्र के प्रति आस्था का भाव, जाग्रत करने का श्रेय महाविद्यालयों/विश्वविद्यालय परिसरों में होने वाली छात्र–राजनीति की गतिविधियों को है। युवा–छात्र आज का नागरिक है। महाविद्यालयों/विश्वविद्यालय परिसरों की कक्षाओं में अध्ययनरत छात्र–छात्राएं पूर्ण रूप से नागरिक की भूमिका में है। युवा छात्र–छात्राएं मतदाता के रूप में देश की परिस्थितियों, समस्याओं व अव्यवस्थाओं पर चिन्तन करके अपना मत देते है तथा अपनी भूमिका भी सुनिश्चित करता है। आज विश्वविद्यालयों में शिक्षा का व्यवसायीकरण हो रहा है, शिक्षण शुल्क में बेतहासा वृद्धि हो रही है। शिक्षा के मन्दिर अब दुकान के रूप में तब्दील हो गए हैं। इस वजह से छात्र संघ का महत्व वर्तमान समय में और भी अधिक बढ़ गया है। छात्र संघ को लोकतंत्र की पहली सीढ़ी के रूप में जाना जाता है लिंगदोह समिति 26 मई 2006 – माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा मंजूर लिंगदोह समिति की निम्नलिखित अनुशंसाएं हैं। लिंगदोह समिति ने प्रमुख रूप से अपनी सिफारिशों में उल्लेख किया है कि पूरे देश में विश्वविद्यालयों एवम् महाविद्यालयों को आमतौर से छात्र प्रतिनिधि निकायों में छात्रों की नियुक्ति हेतु/नामांकन हेतु चुनाव अवश्य ही सम्पन्न करवाना होगा। ये छात्र–संघ के चुनाव निम्नांकित विधियों से या जो भी मानक हो उनके अनुसार सम्पन्न किए जाने है। अपने शोध अध्ययन हेतु उपर्युक्त सिफारिशों का विवरण है – जहाँ–जहाँ विश्वविद्यालय का माहौल स्वतन्त्र एवम् शान्तिपूर्ण चुनाव सम्पन्न कराने के लिए उपयुक्त नहीं है। विश्वविद्यालय एवम् उसके घटक महाविद्यालय विभाग नामांकन पर

Corresponding Author:- अनित कौर.
Address:- शिक्षा विभाग, बिडला परिसर हे.न.ब.गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल

आधारित छात्र प्रतिनिधित्व पद्धति का प्रारम्भ करेंगे। विशेष रूप से जहाँ चुनाव वर्तमान में सम्पन्न हो रहे हैं। उन परिस्थितियों के लिए यह सुझाव उपयुक्त है कि ऐसी नामांकन पद्धति शुद्ध रूप से शैक्षिक मेरिट पर आधारित न हो जैसा कि पूरे देश में हो रहा है। जहाँ चुनाव सम्पन्न नहीं हो रहे हैं या जहाँ पर नामांकन पद्धति लागू हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि नामांकन पद्धति में कईं कमियाँ है और इसका प्रयोग एक आन्तरिक उपाय के रूप में ही होना चाहिए। सभी संस्थाएं जो लिंगदोह समिति से सम्बद्ध है उन संस्थाओं को नामांकन पद्धति से अतिरिक्त एक निश्चित चुनाव पद्धति 5 वर्ष के भीतर अपनाना चाहिए। जो संसदीय चुनाव (अप्रत्यक्ष पद्धति) पर आधारित हो या अध्यक्षीय चुनाव पद्धति (प्रत्यक्ष पद्धति) पर आधारित हो अथवा दोनों का मिश्रण हो। यह वांछनीय है कि सभी संस्थाएँ धीरे–धीरे उपर्युक्त पद्धति का अनुपालन करें। विशेष रूप से निजी वित्त पोषित संस्थाएं जो यथा स्थिति को वरीयता देती हैं।

एस0 अहलूवालिया ने अपने शोध पत्र "भारत में छात्र आन्दोलन" (अप्रकाशित शोध पत्र–1993) पृष्ठ संख्या–20 "भारत में कम्युनिस्ट छात्र आन्दोलन द्वारा सुलभ करायी गयी, संगठनात्मक प्रशिक्षण अनेक पूर्व कम्यूनिस्ट नेताओं के लिए मूल्यवान सम्पत्ति साबित हुई, जिन्होंने सरकारी विभागों में या किसी व्यवसाय में उच्च पदों को प्राप्त कर लिया है। कभी–कभी छात्र आन्दोलन के दौरान अपने अनुभव के आधार पर अपना कैरियर का निर्माण करते हैं और अनेक छात्र राजनीति में अपना कैरियर बनाते हैं।"

सिंह सुरजीत, (2013–14) ने लघु शोध प्रबंध बाराबंकी जनपद के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्र छात्राओं की छात्र संघ के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अधययन में पाया कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्र छात्राओं में छात्र संघ के प्रति अभिवृति में लिंग के आधार पर सार्थक अंतर है एवं क्षेत्रीयता एके आधार पर कोई सार्थक अंतर नही है।

शोध शीर्षक – हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्र छात्राओं का छात्र संघ चुनावों के प्रति अभिवृति का अध्ययन।
उद्देश्य –

1ण हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विघार्थियों का छात्र संघ चुनावों के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।
2ण हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विघार्थियों का लिंग के आधार पर छात्र संघ चुनावों के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।
3ण हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विघार्थियों का क्षेत्रीयता के आधार पर छात्र संघ चुनावों के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।
4ण हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विघार्थियों का शैक्षिक स्तर के आधार पर छात्र संघ चुनावों के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।
5ण हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विघार्थियों का कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के आधार पर छात्र संघ चुनावों के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।

परिकल्पना –

1ण हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के छात्र संघ चुनावों के प्रति अभिवृति में कोई सार्थक अंतर नही है।
2ण हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत शहरी विघार्थियों एवं ग्रामीण विघार्थियों के छात्र संघ चुनावों के प्रति अभिवृति में कोई सार्थक अंतर नही है।
3ण हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत स्नातक स्तर के विघार्थियों एवं शैक्षिक स्तर के आधार पर छात्र संघ चुनावों के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।

शोध अभिकल्प

शोध विधि – प्रस्तुत अध्ययन में वर्णात्मक शोध विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध की जनसँख्या – शोध की जनसँख्या के रूप में हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विघार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श– प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के लिए यादृच्छिक न्यादर्श विधि से **300** हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विघार्थियों का चयन किया गया है।

शोध उपकरण – प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ो के संग्रहण के लिए शोधार्थी द्वारा स्वयं निर्मित छात्र संघ चुनाव अभिवृति का निर्माण किया है।

प्रयुक्त सांखिकीय विधियाँ – प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ो के विश्लेषण के लिए प्रतिशत ,मध्यमान , मानक विचलन एवं टी का प्रयोग किया है।

परिणाम एवं निष्कर्ष –

हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विघार्थियों का छात्र संघ चुनावों के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।

सारणी संख्या 1.1

चर	Frequency	Percent
छात्र	181	58.6
छात्रा	128	41.4
Total	309	100.0

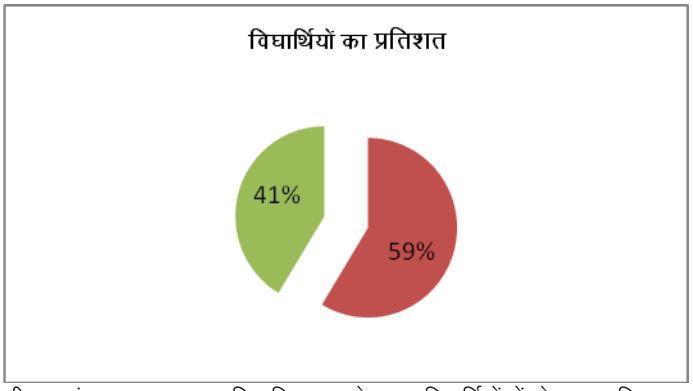

सारणी संख्या 1.1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि न्यादर्श के रूप में चयनित हेमवती नन्दनं बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय के 309 विघार्थियों में से 58.6 प्रतिशत छात्र एवं 41.4 प्रतिशत छात्राओं को पाया गया है।

सारणी संख्या 1.2

चर	Frequency	Percent
कला वर्ग	175	56.6
विज्ञान वर्ग	134	43.4
Total	309	100.0

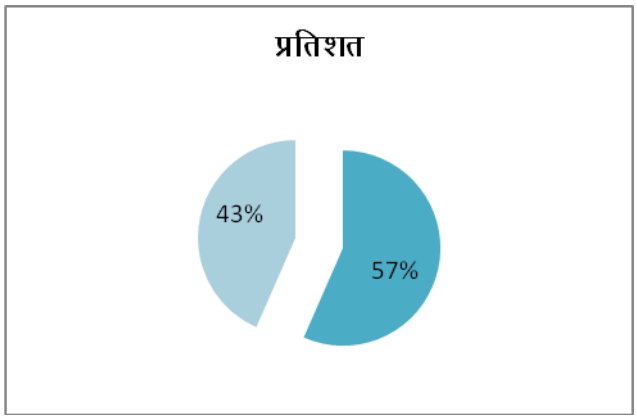

सारणी संख्या 1.2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि न्यादर्श के रूप में चयनित हेमवती नन्दनं बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय के 309 विघार्थियों में से 56.6 प्रतिशत कला वर्ग एवं 43.4 प्रतिशत विज्ञान वर्ग के विघार्थियों को पाया गया है ।

सारणी संख्या 1.3

चर	Frequency	Percent
शहरी वर्ग	170	55.0
Rural	139	45.0
Total	309	100.0

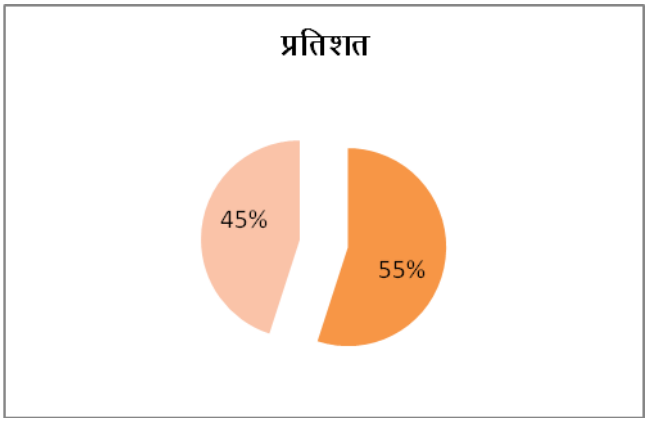

सारणी संख्या 1.3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि न्यादर्श के रूप में चयनित हेमवती नन्दनं बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय के 309 विघार्थियों में से 55 प्रतिशत शहरी एवं 45 प्रतिशत शहरी वर्ग के विघार्थियों को पाया गया है ।

सारणी संख्या 1.4

चर	Frequency	Percent
स्तानक स्तर	195	63.1
परास्तानक स्तर	114	36.9
Total	309	100.0

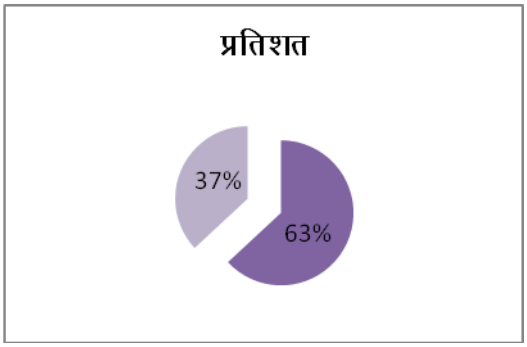

सारणी संख्या 1.4 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि न्यादर्श के रूप में चयनित हेमवती नन्दनं बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय के 309 विघार्थियों में से 63.10 प्रतिशत स्तानक स्तर एवं 36.90 प्रतिशत परास्तानक स्तर के विघार्थियों को पाया गया है।

हेमवती नन्दनं बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्र छात्राओं का छात्र संघ चुनाओ के प्रति अभिवृति का अध्ययन ।

सारणी 1.5

छात्र संघ चुनावों के प्रति अभिवृति	N	Mean	Std. Deviation	T	Df	Sig. (2-tailed)
छात्र	181	93.23	9.156			
छात्रा	128	90.13	10.802	2.726	307	.007

सार्थकता स्तर *0ण्05पर सार्थकता

सारणी 1.5 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि हेमवती नन्दनं बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों का छात्र संघ चुनावों के प्रति अभिवृति का मध्यमान 93.23 एवं छात्राओं का छात्र संघ चुनावो के प्रति अभिवृति का मध्यमान 90.13 प्राप्त हुआ है जिसमे छात्रों का छात्र संघ चुनावो के प्रति अभिवृति का प्राप्त मध्यमान छात्राओं के प्राप्त मध्यमान की अपेक्षा अधिक है । सारणी से आकलित टी का मान 2.726 प्राप्त हुआ है जोकि कि 307 के मान 1.97 से सार्थक रूप से अधिक है अतः शोध से पूर्व बनाई गयी शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। सारणी के विश्लेषण के स्पष्ट है कि हेमवती नन्दनं बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्र – छात्राओं का छात्र संघ चुनाओ के प्रति अभिवृति में सार्थक अंतर पाया गया है ।

हेमवती नन्दनं बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत कला वर्ग के विघार्थियों एवं विज्ञान वर्ग के विघार्थियों का छात्र संघ चुनाओ के प्रति अभिवृति का अध्ययन

सारणी 1.6

छात्र संघ चुनावों के प्रति अभिवृति	N	Mean	Std. Deviation	T	Df	Sig. (2-tailed)
कला वर्ग	175	92.91	9.296	1.950	307	.052
विज्ञान वर्ग	134	90.69	10.698			

सार्थकता स्तर *0ण्05पर सार्थकता

सारणी 1.6 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि हेमवती नन्दनं बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत कला वर्ग के विघार्थियों का छात्र संघ चुनावों के प्रति अभिवृति का मध्यमान 92.91 एवं विज्ञान वर्ग के विघार्थियों का छात्र संघ चुनावो के प्रति अभिवृति का मध्यमान 90.69 प्राप्त हुआ है जिसमे कला वर्ग के विघार्थियों का छात्र संघ चुनावो के प्रति अभिवृति का प्राप्त मध्यमान विज्ञान वर्ग के विघार्थियों के प्राप्त मध्यमान की अपेक्षा अधिक है सारणी से आकलित टी का मान 1.950 प्राप्त हुआ है जोकि कि307 के मान 1.97 से सार्थक रूप से अधिक है अतः शोध से पूर्व बनाई गयी शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है सारणी के विश्लेषण के स्पष्ट है कि हेमवती नन्दनं बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत कला वर्ग के विघार्थियों एवं विज्ञान वर्ग के विघार्थियों का छात्र संघ चुनाओ के प्रति अभिवृति में सार्थक अंतर पाया गया है।

हेमवती नन्दनं बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत शहरी विघार्थियों एवं ग्रामीण विघार्थियों का छात्र संघ चुनाओ के प्रति अभिवृति का अध्ययन

सारणी 1.7

छात्र संघ चुनाओ के प्रति अभिवृति	N	Mean	Std. Deviation	T	Df	Sig. (2-tailed)
शहरी	170	95.12	8.816	6.611	307	.000
ग्रामीण	139	88.06	9.956			

सार्थकता स्तर 0ण्05पर सार्थकता

सारणी 1.7 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि हेमवती नन्दनं बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत शहरी विघार्थियों का छात्र संघ चुनावों के प्रति अभिवृति का मध्यमान 95.12 एवं ग्रामीण विघार्थियों का छात्र संघ चुनावो के प्रति अभिवृति का मध्यमान 88.06 प्राप्त हुआ है जिसमे शहरी वर्ग के विघार्थियों का छात्र संघ चुनावो के प्रति अभिवृति का प्राप्त मध्यमान ग्रामीण वर्ग के विघार्थियों के प्राप्त मध्यमान की अपेक्षा अधिक है सारणी से आकलित टी का मान 6.611 प्राप्त हुआ है जोकि कि307 के मान 1.97 से सार्थक रूप से अधिक है। अतः शोध से पूर्व बनाई गयी शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है सारणी के विश्लेषण के स्पष्ट है कि हेमवती नन्दनं बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत शहरी विघार्थियों एवं ग्रामीण विघार्थियों का छात्र संघ चुनाओ के प्रति अभिवृति में सार्थक अंतर पाया गया है।

हेमवती नन्दनं बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत स्नातक स्तर के विघार्थियों एवं परास्नातक स्तर के विघार्थियों का छात्र संघ चुनाओ के प्रति अभिवृति का अध्ययन

सारणी 1.7

छात्र संघ चुनावों के प्रति अभिवृति	N	Mean	Std. Deviation	T	Df	Sig. (2-tailed)
स्नातक स्तर	195	93.57	9.531	3.839	307	.000
परास्नातक स्तर	114	89.16	10.135			

सार्थकता स्तर *0ण्05पर सार्थकता

सारणी 1.8 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि हेमवती नन्दनं बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत स्नातक स्तर के विघार्थियों का छात्र संघ चुनावों के प्रति अभिवृति का मध्यमान 93.57 एवं परास्नातक स्तर के विघार्थियों का छात्र संघ चुनावो के प्रति अभिवृति का मध्यमान 89.16 प्राप्त हुआ है जिसमे स्नातक स्तर के विघार्थियों का छात्र संघ चुनावो के प्रति अभिवृति का प्राप्त मध्यमान परास्नातक स्तर के विघार्थियों के प्राप्त मध्यमान की अपेक्षा अधिक है सारणी से आकलित टी का मान 3.839 प्राप्त हुआ है जोकि कि307 के मान 1.97 से सार्थक रूप से अधिक है। अतः शोध से पूर्व बनाई गयी शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है सारणी के विश्लेषण के स्पष्ट है कि हेमवती नन्दनं बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत स्नातक स्तर के विघार्थियों एवं परास्नातक स्तर के विघार्थियों का छात्र संघ चुनाओ के प्रति अभिवृति में सार्थक अंतर पाया गया है।

निष्कर्ष :-

अध्ययन के परिणामो के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुए है कि हेमवती नन्दनं बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विघार्थियों का छात्र संघ चुनावों के प्रति अभिवृति में लिंग विभिन्नता, क्षेत्रीयता , शैक्षिक स्तर एवं कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के आधार पर सार्थक अंतर पाया गया है एवं छात्राओं की अपेक्षा छात्रो का दृष्टिकोण छात्र संघ चुनावों के प्रति अधिक सकारात्मक पाया गया है। 70 प्रतिशत विघार्थियों ने छात्र संघ की उपयोगिता विश्वविद्यालय के प्रशासनिक कार्यो में जैसे कि आई कार्ड बनाने, अंकतालिका सम्बन्धी समस्याओं के सुधार, होस्टल सम्बन्धी व्यवस्था, एवं विघार्थियों की समस्या विश्वविद्यालय के समक्ष रखने के रूप में माना है।

महत्व :-

वर्तमान समय में प्रचलित वैश्विक शासन व्यवस्थाओं में लोकतंत्र अधिकांश देशों की शासन व्यवस्था का आधार है। लोकतंत्र अपनी लोकप्रियता के कारण विश्व के अधिकांश देशों में शासन व्यवस्था के रूप में स्थापित हो चुका है। निःसन्देह लोकतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था प्रचलित सभी शासन व्यवस्थाओं से श्रेष्ठ व उपर्युक्त है। किन्तु लोकतंत्र का सफलता पूर्वक संचालन एवम् लोकतन्त्रात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति तभी सम्भव है जब नागरिक को छात्र–जीवन से ही नागरिकता के गुणों के विकास हेतु प्रशिक्षण दिया जाय। छात्र संघ सबसे बेहतर एवम् उपर्युक्त तरीका है नागरिकता के प्रशिक्षण का। छात्र–संघ लोकतन्त्र की बुनियाद को मजबूत करता है। छात्र–संघ से ही जनता का राजनीतिक प्रशिक्षण सुनिश्चित होता है। छात्र–संघ से ही छात्र–छात्राओं में नेतृत्व क्षमता का विकास होता है। युवा छात्र–छात्राओं में आदर्श नागरिकता के गुणों का विकास, लोकतन्त्रात्मक व्यवस्था की समझ तथा लोकतंत्र के प्रति आस्था का भाव, जाग्रत करने का श्रेय महाविद्यालयों/विश्वविद्यालय परिसरों मं होने वाली छात्र–राजनीति की गतिविधियों को है। स्नातक कक्षाओं में अध्ययनरत युवा छात्र–छात्राएं पूर्ण रूप से नागरिक की भूमिका में है। युवा छात्र–छात्राएं मतदाता के रूप में देश की परिस्थितियों, समस्याओं व अव्यवस्थाओं पर चिन्तन करके अपना मत देते है तथा अपनी भूमिका भी सुनिश्चित करता है। आज विश्वविद्यालयों में शिक्षा का व्यवसायीकरण हो रहा है, शिक्षण शुल्क में बेतहासा वृद्धि हो रही है। शिक्षा के मन्दिर अब दुकान के रूप में तब्दील हो गए हैं। इस वजह से छात्र संघ का महत्व वर्तमान समय में और भी अधिक बढ़ गया है। छात्र संघ को लोकतंत्र की पहली सीढ़ी के रूप में जाना जाता है जो छात्र–संघ के महत्व को दर्शाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. सिंह सुरजीत, (2013–14) "लघु शोध प्रबंध बाराबंकी जनपद के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्र छात्राओं की छात्र संघ के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अधययन", अप्रकाशित शोध ग्रन्थ, हेमवती नन्दनं बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय
2. सिंह, अरूण कुमार (2010) "मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ" मोती लाल, बनारसी दास प्रकाशन, दिल्ली।
3. लिंगदोह समिति (26 मई, 2006) "छात्र संघ से सम्बन्धित अनुशंसाएं"।
4. बोना, जोसेफ डी0 (1968) "भारतीय विश्वविद्यालयों में अनुशासनहीनता एवम् छात्र नेतृत्व"।
5. चन्द्रा, एस0ए0 (1969) "छात्र अशान्ति पर टिप्पणी" नई दिल्ली।
6. कुमार, के0 (1969) "छात्र अशान्ति पर छात्रों का दृष्टिकोण"।
7. घोष, एस0के0 (1971) "संसार के चारों ओर छात्र चुनौती"।
8. अहलू वालिया, एस0 (1963) "भारत में छात्र आन्दोलन", अप्रकाशित शोध ग्रन्थ, नई दिल्ली।
9. किरण, जे0डब्ल्यू0 (1967) "भारत में महाविद्यालयी शिक्षा में महाविद्यालयी प्रशासन"।
10. लाल, वि0वि0 (1981) शोध छात्र संघ चुनाव वित्त एवम् विधि का एक अध्ययन, फैजाबाद विश्वविद्यालय, उ0प्र0।